Ihaya ul Uloom Se 38 Madani Phool
(Qist : 1) (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 464
Weekly Booklet : 464

इह़याउल उ़लूम

से 38 मदनी फूल (क़िस्त़ : 1)

सफ़ह़ात : (17)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ का मुख़्तसर तआरुफ़ 01
अमीरे अहले सुन्नत का एक अहम मक्तूब 04
इन्सान, बादशाह और घटिया लोग 13
दिल कब मर जाता है ? 15

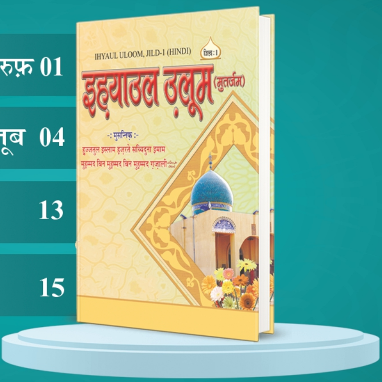

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

“इह़याउल उ़लूम” से 38 मदनी फूल (क़िस्त़ : 1)[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला ““इह़याउल उ़लूम” से 38 मदनी फूल (क़िस्त़ : 1)” पढ़ या सुन ले उसे सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बना कर मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى اللهُ عليهِ واٰلهٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा। (مجمع الزوائد، 10/253، حديث: 17298)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़

हुज्जतुल इस्लाम, अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद त़ूसी ग़ज़ाली शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه 450 हिजरी में ख़ुरासान के ज़िला त़ूस के अ़लाक़े त़ाबिरान में पैदा हुए। (اتحاف السادة المتقين، 1/9) (ख़ुरासान ईरान के मश्रिक़ में वाक़े एक वसी सूबा था, मौजूदा ख़ुरासान में क़दीम ख़ुरासान का निस्फ़ भी शामिल नहीं, कुछ अफ़ग़ानिस्तान और कुछ दीगर ममालिक में शामिल हो चुका है)

आप के वालिदे मोह़तरम पेशे के लिह़ाज़ से धागे के ताजिर थे, इसी निस्बत से आप का ख़ानदान “ग़ज़ाली” कहलाता है। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

1...येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब “इह़याउल उ़लूम (उर्दू)” जिल्द : 1 से तय्यार किया गया है।

और आप के भाई इमाम अह़मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कम उ़म्र ही थे कि 465 हिजरी में वालिदे मोह़तरम फ़ौत हो गए। वालिदे मोह़तरम ने इन्तिक़ाल से पहले अपने एक नेक सीरत दोस्त को वसिय्यत की थी कि "मेरा तमाम असासा (यानी मालो दौलत) मेरे इन दोनों बेटों की तालीम व परवरिश पर ख़र्च कर दीजिएगा।" उन्हों ने ऐसा ही किया। इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम अल्लाह पाक से दुआ़ करते कि "मुझे बेटा अ़त़ा कर और उसे फ़क़ीह (यानी आ़लिम) बना।" नीज़ इसी त़रह़ बयानात की मह़ाफ़िल में ह़ाज़िर होते और वहां भी रो रो कर अल्लाह पाक से दुआ़ करते कि "मुझे बेटा अ़त़ा कर और उसे मुबल्लिग़ बना।" अल्लाह पाक ने उन की येह दोनों दुआ़एं क़बूल फ़रमाईं। (اتحاف السادة المتقين، 1/9۔ طبقات الشافعية الكبرى، 6/194)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिए कई ममालिक का सफ़र किया और सालहा साल तक मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून सीखते रहे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कई असातिज़ए किराम और कई शागिर्द थे और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कई किताबें तह़रीर फ़रमाईं लेकिन अल्लाह पाक ने आप की किताब "इह़याउल उ़लूम" से आप को बहुत मक़्बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाई, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह किताब अ़रबी ज़बान में लिखी है। आज भी दुनिया भर में आप की इस किताब की शोहरत है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो देखा कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा और ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा عَلَيْهِمَا السَّلَام के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर फ़ख़्र करते हुए फ़रमा रहे हैं : "क्या तुम्हारी उम्मतों में ग़ज़ाली जैसा आ़लिम है ?" दोनों ने अ़र्ज़ की नहीं। इमाम अबुल ह़सन शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है कि "जिसे अल्लाह पाक से कोई ह़ाजत (ज़रूरत) हो वोह इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से दुआ़ करे।" (اتحاف السادة المتقين، 1/12۔ مرآة الجنان، 3/249)

इमामे तसव्वुफ़ ! सब अमराज़े दिल से ख़लासी मैं पाऊं इमामे ग़ज़ाली !
करम ! वक़्ते रिह़लत है कलिमे से मह़रूम कहीं मर न जाऊं इमामे ग़ज़ाली !
शहा ! क़ल्बे अ़त्तार की येह सदा है मैं रौज़े पे आऊं इमामे ग़ज़ाली

(वसाइले फ़िरदौस, स. 39)

कुछ इह़याउल उ़लूम के बारे में

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सफ़रे बैतुल मुक़द्दस का बेहतरीन इ़ल्मी सर्माया येह किताब "इह़याउल उ़लूम" है, अख़्लाक़ियात के मौज़ू पर येह एक ऐसी किताब है, जिस की मिसाल दुनिया की अख़्लाक़ी किताबों में मिलना मुश्किल है। मश्हूर है कि आप ने इस किताब के लिए बैतुल मुक़द्दस में जो जगह मुन्तख़ब की थी वोह "क़ुब्बतुस्सख़रह" का मश्रिक़ी गोशा था और आप उस गोशे में मोतकिफ़ थे। इस मुबारक किताब का मुकम्मल नाम "इह़याउ उ़लूमुद्दीन" है मगर मश्हूर इह़याउल उ़लूम के नाम से है।

ग़ज़ाली के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से इह़याउल उ़लूम के बारे में पांच बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के पांच फ़रामीन

﴾1﴿ तक़रीबन पांच सौ साल पहले के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिद कबीर अ़ली बिन अबू बक्र सक़्क़ाफ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर ग़ैर मुस्लिम इह़याउल उ़लूम को पढ़ ले तो मुसलमान हो जाए। इस में ऐसा छुपा हुवा राज़ है जो दिलों को मक़नात़ीस की त़रह़ खींचता है।" (تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء، 5/358)

﴾2﴿ तक़रीबन नौ सौ साल पहले के बुज़ुर्ग इमामुल ह़रमैन के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़ाफ़िर बिन इस्माई़ल फ़ारिसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इह़याउल उ़लूम" जैसी किताब पहले किसी ने नहीं लिखी। (تاریخ ابن عساکر، 55/201)

﴾3﴿ तक़रीबन साढ़े सात सौ साल पहले के अ़ज़ीम शाफ़ेई़ मुह़द्दिस व शारेह़ ह़ज़रते इमाम यह़या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "इह़याउल उ़लूम" क़ुरआने करीम से बहुत क़रीब है। (تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء، 5/359)

﴾4﴿ इमामुल मुकाशिफ़ीन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अकबर मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं इह़याउल उ़लूम को काबए मुअ़ज़्ज़मा के सामने बैठ कर पढ़ा करता था। (اتحاف السادۃ، 1/38)

﴾5﴿ ताजुल आ़रिफ़ीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ऐ़दरूस رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ को तक़रीबन इह़याउल उ़लूम पूरी ह़िफ़्ज़ थी, आप फ़रमाते हैं : “इह़याउल उ़लूम” को लाज़िम पकड़ लो। येह अल्लाह पाक की नज़रे रह़मत और रिज़ा का ज़रीआ़ है तो जिस ने उस से मह़ब्बत की और उस का मुत़ालआ़ कर के उस पर अ़मल किया उस ने अल्लाह पाक और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मलाइका व अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की मह़ब्बत को पा लिया। मज़ीद फ़रमाया : “हमारे लिए क़ुरआनो सुन्नत के इ़लावा कोई रास्ता व मेयार नहीं और इन की मुकम्मल तशरीह़ व तफ़्सील हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने अपनी अ़ज़ीमुश्शान तस्नीफ़ इह़याउल उ़लूम में फ़रमा दी है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ऐ़दरूस رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने इह़याउल उ़लूम को 25 मरतबा मुकम्मल पढ़ा। आप हर बार ख़त्म कर के फ़ुक़रा व त़लबा की दावत करते थे।” (تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء، 5/360)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का एक अहम मक्तूब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! जहां मेरे आक़ा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ का अ़क़ाइदो आमाल की पुख़्तगी के

मुआ़मले में मुझ पर फ़ैज़ान है वहां बात़िन की इस्लाह़ में हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का मुझ पर बड़ा एह़सान है। सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की मिन्हाजुल आ़बिदीन और इह़याउल उ़लूम वग़ैरा पढ़ते हुए बारहा ऐसा मह़सूस होता है, गोया मुझे ही कान पकड़ कर समझा रहे हैं कि "बड़ा नेक बना फिरता है ज़रा अपने आप को तो देख ! तुझ में तो येह भी ख़राबी है और तेरे अन्दर तो वोह भी बुराई है, नीज़ जब भी पढ़ूं ऐसा लगता है कि रूह़ को नई नई ग़िज़ाएं मिल रही हैं, उन की कुतुब एक आध बार पढ़ कर रख देने वाली नहीं, ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक पढ़े जाने के लाइक़ हैं।" सरकारे आला ह़ज़रत और सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की मुबारक किताबें अगर मुत़ालए़ में न आतीं तो शायद मैं बरबाद हो जाता ! ख़ुदा की क़सम ! हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इह़याउल उ़लूम लिख कर उम्मत पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया है। दावते इस्लामी के तमाम जामिआ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना के जुम्ला असातिज़ा, नाज़िमीन व नाज़िमात, त़लबा व त़ालिबात, सभी मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की नीज़ दावते इस्लामी के चैनल के नाज़िरीन की ख़िदमात में मेरी दस्तबस्ता मदनी इल्तिजा है कि इह़याउल उ़लूम का मुत़ालआ़ न किया हो तो पहली फ़ुर्सत में फ़रमा लें। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ शाफ़िय़ुल मज़्हब थे लिहाज़ा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बयान कर्दा फ़िक़्ही मसाइल में ह़नफ़ी, मालिकी और ह़म्बली ह़ज़रात अपने अपने उ़लमाए किराम से रहनुमाई ह़ासिल करें। बग़दादे मुअ़ल्ला में अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में आराम फ़रमाने वाले मेरे आक़ा व इमाम, हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पर अल्लाह पाक हर

आन करोड़ों रह़मतों का नुज़ूल फ़रमाए और उन के त़ुफ़ैल मुझ गुनहगारों के सरदार को बे ह़िसाब बख़्शे। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

एक चुप सौ सुख

10 जुमादल ऊला 1433 हि.
03-4-2012

“इह़याउल उ़लूम” अमीरे अहले सुन्नत की नज़र में

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक मदनी मुज़ाकरे में इरशाद फ़रमाया : बहारे शरीअ़त आ़लिम, फ़तावा रज़विय्या मुफ़्ती और इह़याउल उ़लूम मोमिने कामिल बनाने वाली किताब है। एक मरतबा इरशाद फ़रमाया : अगर (नेक) इन्सान बनना चाहते हो तो इह़याउल उ़लूम पढ़ो जिस ने येह किताब नहीं पढ़ी मुझे वोह अधूरा अधूरा सा लगता है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इह़याउल उ़लूम के मुत़ालए़ के दौरान अहम निकात (POINTS) नोट किए जाते रहे ताकि इन्हें पढ़ कर किताब की बरकतें ह़ासिल होती रहें। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم ثُمَّ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم ! इह़याउल उ़लूम (जिल्द : 1) से अहम निकात ब सूरते रिसाला “हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़” शोबे की त़रफ़ से जारी हो रहा है। इसे ख़ुद भी पढ़िए और नेकी की दावत आ़म करने के नेक जज़्बे से दूसरों को भी शेयर कीजिए बल्कि हो सके तो अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिए तक़्सीम भी कीजिए। अल्लाह पाक ! हमें इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

त़ालिबे दुआ़ए ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व बे ह़िसाब मग़्फ़िरत
अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِیَ عَنْہُ
2 ज़िल ह़ज शरीफ़ 1447 हि.
19 मई 2026

﴾1﴿ बात़िन की पाकीज़गी

जो शख़्स अपने आ'ज़ा को गुनाहों से बचा कर इ़बादत में मश्ग़ूल नहीं करता, वोह बुलन्द मक़ाम ह़ासिल नहीं कर सकता, लिहाज़ा जब मक़्सद (यानी जन्नत) इतना अ़ज़ीम और बा इ़ज़्ज़त हो तो उस तक पहुंचने का रास्ता भी मेह़नत त़लब और त़वील होता है। येह सोचना कि "दिल की पाकीज़गी" आसानी से ह़ासिल हो जाएगी, मह़ज़ ग़लत़ फ़हमी है। (इह़याउल उ़लूम, 1/9 तस्हीलन)

﴾2﴿ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आजिज़ी व तक़्वा

एक बार इत्तिफ़ाक़न सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दिमश्क़ के मद्रसे "अमीनिय्या" में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि वहां एक उस्ताज़ कह रहे थे : قَالَ الْغَزَالِی यानी वोह आप के कलाम के साथ तदरीस कर रहे थे, येह सुन कर आप पर ख़ुदपसन्दी (में गिरिफ़्तार होने) का ख़ौफ़ त़ारी हो गया तो आप ने दिमश्क़ छोड़ दिया। (इह़याउल उ़लूम, 1/20)

﴾3﴿ दिरहमो दीनार की ह़ैसिय्यत

दिरहमो दीनार दर ह़क़ीक़त दो बे फ़ायदा पत्थर हैं (इसी त़रह़ आज के काग़ज़ी करन्सी नोट एक त़रह़ से आ़म काग़ज़ के टुकड़े हैं) अगर अल्लाह पाक उन के ज़रीए इन्सानों की ज़रूरिय्यात पूरी होना आसान न फ़रमाता तो उन की ह़ैसिय्यत आ़म काग़ज़ से ज़ियादा न होती। (इह़याउल उ़लूम, 1/67 मफ़्हूमन)

﴾4﴿ सुवाल करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : इ़ल्म ख़ज़ाना है और इस की चाबियां सुवाल करना है। ख़बरदार ! तुम सुवाल किया करो क्यूंकि इस में चार को अज्र दिया जाएगा : ﴾1﴿ सुवाल करने वाले को ﴾2﴿ आ़लिम को ﴾3﴿ ग़ौर से सुनने वाले को और ﴾4﴿ उन से मह़ब्बत करने वाले को। (حلیۃ الاولیاء، 3/224، حدیث:3781بتغیرٍ۔ احیاء العلوم، 1/56)

﴾5﴿ हमारी ह़ालत

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इह़याउल उ़लूम को तह़रीर करने के दौरान इस की तरतीब बयान फ़रमाते हुए एक जगह फ़रमाया कि मैं साबित करूंगा कि इस ज़माने के लोग सह़ीह़ रास्ते से फिर गए हैं और चमकती रेत को पानी समझ कर धोके का शिकार हैं और उ़लूम के मुआ़मले में मग़्ज़ (यानी अस्ल) को छोड़ कर छिल्के को काफ़ी समझ रखा है। (इह़याउल उ़लूम, 1/38)

﴾6﴿ उ़लमा की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : उ़लमा आ़म मोमिनीन से 700 दर्जे बुलन्द होंगे, हर दो दर्जों के दरमियान 500 साल की मसाफ़त है।

(قوت القلوب، 1/241۔ احیاء العلوم، 1/43)

﴾7﴿ 40 अह़ादीस याद करने की फ़ज़ीलत

2 फ़रामीने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मेरी उम्मत के लिए अह़काम की 40 ह़दीसें याद कीं और उन तक पहुंचा दीं मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ी और गवाह होउंगा। इसी त़रह़ इरशाद फ़रमाया : मेरा जो उम्मती 40 ह़दीसें याद करेगा वोह अल्लाह पाक से आ़लिम और फ़क़ीह़ हो कर मिलेगा।

(جامع بیان العلم و فضلہ، ص62، 63، حدیث:187، 188۔ احیاء العلوم، 1/47)

﴾8﴿ आ़लिम का कम से कम दर्जा

आ़लिम का कम से कम दर्जा येह है कि वोह इस बात का यक़ीन रखे कि “आख़िरत दुनिया से बेहतर है।” (इह़याउल उ़लूम, 1/46)

﴾9﴿ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो इ़ल्मे दीन ह़ासिल करेगा अल्लाह पाक उस की मुश्किलात को आसान फ़रमा देगा और उसे वहां से रिज़्क़ अ़त़ा

फ़रमाएगा जहां से इस का गुमान भी न होगा।

(جامع بیان العلم وفضلہ، ص66،حدیث:198۔احیاء العلوم، 1/47)

﴾10﴿ दो गिरोह

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : अगर मेरी उम्मत के दो गिरोह उमरा और उ़लमा ठीक हो जाएं तो सब लोग ठीक हो जाएंगे और अगर येह बिगड़ जाएं तो सब लोग बिगड़ जाएंगे। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص231،حدیث:710۔احیاء العلوم، 1/47)

﴾11﴿ दीन का सुतून

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : हर चीज़ का एक सुतून होता है और इस दीन का सुतून फ़िक़्ह है। (معجم اوسط، 4/337،حدیث:6166-احیاء العلوم، 1/48)

﴾12﴿ इ़ल्म की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इ़ल्म से बढ़ कर इ़ज़्ज़त वाली शै कोई नहीं और बादशाह लोगों पर ह़ुकूमत करते हैं जब कि उ़लमा बादशाहों पर ह़ुकूमत करते हैं। (इह़याउल उ़लूम, 1/50)

﴾13﴿ शब बेदारी से ज़ियादा मह़बूब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ عَنْہ) ने फ़रमाया : रात में कुछ देर इ़ल्म की तकरार करना मुझे सारी रात शब बेदारी से ज़ियादा मह़बूब है इसी त़रह़ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ और इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से भी मन्क़ूल है। (इह़याउल उ़लूम, 1/52)

﴾14﴿ इ़ल्म नर है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इ़ल्म नर है और आदमियों में से मर्द ही इस से मह़ब्बत करते हैं। (इह़याउल उ़लूम, 1/54)

﴾15﴿ 70 सिद्दीक़ीन का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने इ़ल्म का एक बाब इस लिए सीखा कि लोगों को सिखाएगा तो उसे 70 सिद्दीक़ीन का सवाब दिया जाएगा।

(الترغیب والترہیب،1/68،حدیث:119, इह़याउल उ़लूम, 1/60)

﴾16﴿ दुनिया मल्ऊ़न है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : दुनिया और जो कुछ इस में है सब मल्ऊ़न है सिवाए ज़िक्रे इलाही के और उस के जो क़ुर्बे इलाही का सबब बने और इ़ल्म सीखने वाले और सिखाने वाले के।(سنن ابن ماجہ،4/428،حدیث:4112۔احیاء العلوم،1/61)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए लिखते हैं : “जो चीज़ अल्लाह (पाक) व रसूल (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से ग़ाफ़िल कर दे वोह दुनिया है या जो अल्लाह व रसूल की नाराज़ी का सबब हो वोह दुनिया है। बाल बच्चों की परवरिश, ग़िज़ा, लिबास, घर वग़ैरा (शरीअ़त की ना फ़रमानी से बचते हुए) ह़ासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम है येह दुनिया नहीं।” (मिरआतुल मनाजीह़, 7/17)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुसलमान अपने भाई को इस से अफ़्ज़ल फ़ायदा नहीं दे सकता कि उसे कोई अच्छी बात पहुंचे तो वोह अपने भाई को पहुंचा दे। (جامع بیان العلم وفضلہ،ص62،حدیث:185۔احیاء العلوم،1/62)

﴾17﴿ इ़ल्म, अ़मल से अफ़्ज़ल

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक तुम ऐसे ज़माने में हो जिस में उ़लमा ज़ियादा क़ुर्रा और ख़ुत़बा थोड़े हैं। देने वाले ज़ियादा और मांगने वाले कम हैं। अ़न्क़रीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा जिस में उ़लमा कम और

ख़ुत़बा ज़ियादा होंगे। देने वाले कम और भिकारी ज़ियादा होंगे। उस ज़माने में इ़ल्म अ़मल से अफ़्ज़ल होगा। (معجم کبیر، 3/197، حدیث:3111۔ احیاء العلوم، 1/48)

﴾18﴿ इ़ल्म की क़ीमत है

ह़ज़रते इ़करिमा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : बेशक इस इ़ल्म की क़ीमत है। पूछा गया कि इस की क़ीमत क्या है ? फ़रमाया : येह कि तुम इसे उस शख़्स तक पहुंचाओ जो इसे अच्छी त़रह़ याद रखे और ज़ाए न करे। (इह़याउल उ़लूम, 1/64)

﴾19﴿ किस पर क्या फ़र्ज़ नहीं ?

गूंगे पर ह़राम बातों का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ नहीं और अन्धे पर येह सीखना फ़र्ज़ नहीं कि किन चीज़ों को देखना ह़राम है। जंगल में रहने वाले पर येह सीखना फ़र्ज़ नहीं कि किन किन मजलिसों में बैठना ह़राम है। (इह़याउल उ़लूम, 1/74)

﴾20﴿ हलाकत का बाइ़स

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन चीज़ें हलाकत में डालने का बाइ़स हैं : ﴾1﴿ ऐसा बुख़्ल जिस की इत़ाअ़त की जाए ﴾2﴿ ऐसी ख़्वाहिश जिस की पैरवी की जाए ﴾3﴿ और इन्सान का ख़ुद पसन्दी में मुब्तला हो जाना। (مسند بزار، 8/295، حدیث:3366۔ احیاء العلوم، 1/76)

﴾21﴿ इ़ल्मे मुकाशफ़ा

इ़ल्मे मुकाशफ़ा सिद्दीक़ीन और अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों का इ़ल्म है। येह एक ऐसा नूर है जो उस वक़्त दिल में पैदा होता है जब दिल को तमाम बुरी सिफ़ात से पाक कर लिया जाए। फिर इस के ज़रीए इन्सान पर बहुत सी ऐसी ह़क़ीक़तें ज़ाहिर होने लगती हैं जिन के बारे में पहले वोह सिर्फ़ सुना करता था।

(इह़याउल उ़लूम, 1/87 तस्हीलन)

﴾22﴿ तक़्वा के मरातिब

जहां तक ह़लाल व ह़राम की बात है तो ह़राम से बच कर तक़्वा इख़्तियार करना दीन से है लेकिन इस वरअ़ व तक़्वा के 4 दर्जे हैं :

﴾1﴿ ज़ाहिरी ह़राम से बचना : येह वोह तक़्वा है जो अ़दालत व शहादत में शर्त़ है उसे तर्क करने के सबब इन्सान क़ज़ा व शहादत और विलायत की अहलियत से निकल जाता है। (यानी येह ऐसा बुनियादी तक़्वा है जो शरई़ एतिबार से ज़रूरी है। जो शख़्स खुले ह़राम कामों से न बचे वोह मोतबर गवाह, क़ाज़ी या दीनी मन्सब का अहल नहीं रहता।)

﴾2﴿ सालिह़ीन का तक़्वा : येह उन शुब्हे वाली चीज़ों से बचने का नाम है जिन के बारे में हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम्हें शक में डाले उसे छोड़ कर जो शक में न डाले उसे इख़्तियार करो।" (ترمذی،4/232،حدیث:2526) एक रिवायत में है : "गुनाह दिलों में खटकता है।" (معجم کبیر،9/149،حدیث:8748)

﴾3﴿ परहेज़गारों का तक़्वा : येह ऐसी ह़लाल चीज़ों को छोड़ देने का नाम है जिन के बारे में ख़ौफ़ हो कि वोह ह़राम तक पहुंचा देंगी। जैसा कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी उस वक़्त तक परहेज़गारों में शामिल नहीं हो सकता जब तक उस चीज़ को न छोड़ दे जिस में कोई ह़रज नहीं इस ख़ौफ़ से कि कहीं उस में मुब्तला न हो जाए जिस में ह़रज है।" (ابن ماجہ،4/475،حدیث:4215) मसलन : लोगों के बारे में गुफ़्तगू से इस डर से बचना कि कहीं किसी की ग़ीबत न हो जाए और ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ ज़ियादा खाने पीने से बचना कि कहीं तकब्बुर या ग़फ़्लत पैदा न हो जाए और वोह मना की हुई चीज़ों में न जा पड़े।

﴾4﴿ सिद्दीक़ीन का तक़्वा : येह अल्लाह पाक के सिवा हर चीज़ से किनाराकश हो जाने (यानी बचने) का नाम है इस ख़ौफ़ से कि कहीं ज़िन्दगी का कोई लम्ह़ा ऐसा न गुज़रे जो अल्लाह पाक के नज़्दीक होने से रोके अगर्चे वोह जानता है कि येह उसे ह़राम की त़रफ़ नहीं ले जाएगा। (इह़याउल उ़लूम, 1/84)

﴾23﴿ शाने फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ने फ़रमाया : इ़ल्म के दस ह़िस्सों में नौ चले गए उन से पूछा गया आप येह बात फ़रमाते हैं ह़ालांकि जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم) मौजूद हैं उन्हों ने फ़रमाया : मैं फ़तवा और अह़काम के इ़ल्म की बात नहीं करता मेरी मुराद मारिफ़ते इलाही है। (इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/97)

﴾24﴿ इन्सान, बादशाह और घटिया लोग

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) से पूछा गया इन्सान कौन हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : उ़लमाए किराम, पूछा गया बादशाह कौन हैं ? फ़रमाया : परहेज़गार लोग, फिर पूछा गया : घटिया लोग कौन ? फ़रमाया : जो दीन के बदले दुनिया ह़ासिल करते हैं। (इह़याउल उ़लूम, 1/50)

﴾25﴿ अल्लाह पाक की मारिफ़त की ह़द

अल्लाह पाक की पहचान की ह़द येह है कि उस की पहचान से आ़जिज़ होने का इक़रार कर लिया जाए। (इह़याउल उ़लूम, 1/88)

﴾26﴿ दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ़

आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ़ येह है कि बन्दा

(नफ़्सानी) ख़्वाहिशात से रुक जाए और अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام की पैरवी करे जिस क़दर दिल की सफ़ाई होती जाएगी और इस में ह़क़ का ह़िस्सा आता जाएगा उसी क़दर इस में ह़क़ीक़तें चमक उठेंगी और येह उस रियाज़त (यानी मुजाहदों) के बग़ैर नहीं हो सकता। इल्मे दीन सीखना सिखाना भी इस (दिल की सफ़ाई) का ज़रीआ़ हैं। (इत्तिहाफ़ السادة المتقين, 1/289, इह़याउल उ़लूम, 1/89)

﴾27﴿ ग़लत़ बात सुनने का नुक़्सान

ह़ज़रते अह़मद बिन यह़या رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه बयान करते हैं एक दिन ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه क़िन्दीलों के बाज़ार से गुज़रे, हम भी पीछे हो लिए, अचानक देखा कि एक शख़्स किसी आ़लिम से बेहूदा बातें कर रहा है, आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه ने हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “जिस त़रह़ अपनी ज़बानों को बुरी बातें करने से बचाते हो इसी त़रह़ कानों को भी बुरी बातें सुनने से बचाओ क्यूंकि सुनने वाला कहने वाले के साथ शरीक होता है। बेवुक़ूफ़ जब अपने बरतन में कोई बदतरीन चीज़ देखता है तो उसे तुम्हारे बरतनों में डालना चाहता है, अगर इस की बात को लौटा दिया जाए तो लौटाने वाला ख़ुशबख़्त है जैसे वोह बात कहने वाला बदबख़्त है।” (इह़याउल उ़लूम, 1/102)

﴾28﴿ नेकों की बारगाह में ह़ाज़िरी का अन्दाज़

इमाम शाफ़ेई رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه ह़ज़रते शैबान राई رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه के सामने इस त़रह़ बैठते जैसे त़ालिबे इल्म मक्तब (यानी मद्रसे) में बैठता है और पूछते कि “इस इस मुआ़मले का क्या हुक्म है ?” किसी ने आप से अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! आप जैसा

अ़ज़ीम शख़्स इस बदवी (यानी गांव के रहने वाले) से पूछता है ? फ़रमाया : बेशक इसे उस चीज़ की तौफ़ीक़ मिली है जिस से हम ग़ाफ़िल हैं।

(इह़याउल उ़लूम, 1/92, बतग़य्युर)

﴾29﴿ दिल कब मर जाता है ?

ह़ज़रते फ़त्ह़ मौसिली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर मरीज़ को खाने पीने और दवा से रोक दिया जाए तो क्या वोह मर नहीं जाएगा ? लोगों न कहा : क्यूं नहीं ! फ़रमाया : दिल का भी येही मुआ़मला है कि अगर तीन दिन तक उस से इ़ल्मो ह़िक्मत को दूर रखा जाए तो वोह मुर्दा हो जाता है। (इह़याउल उ़लूम, 1/51)

﴾30﴿ लोग सोए हुए हैं

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का फ़रमान है : हम पर्दे खुलने के दिन से अल्लाह पाक की पनाह मांगते हैं, बेशक लोग सोए हुए हैं जब मरेंगे तो उन की आंखें खुल जाएंगी। (इह़याउल उ़लूम, 1/52)

﴾31﴿ मसाइल में एह़तियात़ का आ़लम

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से 48 मसाइल पूछे गए जिन में से 32 के बारे में आप ने फ़रमाया : मैं नहीं जानता। (इह़याउल उ़लूम, 1/112)

﴾32﴿ इ़ल्मो अ़मल

हर इ़ल्म अ़मल है क्यूंकि इ़ल्म एक फ़ेल है जिसे ह़ासिल किया जाता है लेकिन हर अ़मल इ़ल्म नहीं। (इह़याउल उ़लूम, 1/98) (हर इ़ल्म एक एतिबार से अ़मल है क्यूंकि इ़ल्म ख़ुद ब ख़ुद इन्सान को नहीं मिल जाता बल्कि उसे ह़ासिल करने के लिए कोशिश करनी पड़ती है, जैसे पढ़ना, सुनना, समझना, याद करना और

ग़ौरो फ़िक्र करना। इस लिए इ़ल्म ह़ासिल करना भी एक अ़मल है लेकिन हर अ़मल इ़ल्म नहीं होता क्यूंकि बहुत से काम ऐसे होते हैं जो इन्सान बग़ैर सह़ीह़ समझे कर लेता है, मसलन : एक त़ालिबे इ़ल्म किताब पढ़ कर नमाज़ के मसाइल सीखता है, येह "इ़ल्म" भी है और इसे ह़ासिल करना "अ़मल" भी है लेकिन अगर कोई शख़्स सिर्फ़ लोगों को देख कर नमाज़ की ह़रकात दोहरा ले और उसे येह मालूम न हो कि फ़र्ज़ क्या है और वाजिब क्या, तो येह अ़मल तो है मगर मुकम्मल इ़ल्म नहीं।)

﴾33﴿ इमामे आज़म की ख़ामोशी और फ़िक्रे आख़िरत

ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ अक्सर ख़ामोश रहते और हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मसरूफ़ रहते और लोगों से बात चीत कम करते थे, येह आप के इ़ल्मे बात़िन और दीन के अहम उमूर में मश्ग़ूल रहने पर वाज़ेह़ दलाइल हैं, क्यूंकि जिसे ख़ामोशी और ज़ोहद अ़ता किया गया बेशक उसे सारा इ़ल्म अ़ता कर दिया गया। (इह़याउल उ़लूम, 1/118)

﴾34﴿ तवक्कुले सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ की बीमारी में आप से अ़र्ज़ की गई : क्या हम आप के लिए त़बीब को ले आएं ? तो आप ने फ़रमाया : "त़बीब ही ने तो मुझे बीमार किया है।" नीज़ येह भी मन्क़ूल है कि जब आप बीमार हुए और पूछा गया कि त़बीब ने आप के मरज़ के बारे में क्या कहा है ? तो फ़रमाया : "त़बीब ने कहा है कि मैं जो चाहता हूं करता हूं।" (इह़याउल उ़लूम, 1/131) (आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ ने त़बीब से अल्लाह पाक की ज़ात मुराद ली और अपनी इस बात में गोया इस त़रफ़ इशारा किया कि अल्लाह पाक के हुक्म और फ़ैसले पर रज़ामन्दी का इज़्हार किया जाए।)

﴾35﴿ 40 साल तक दुआ़

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : 40 साल से मैं ने जो भी नमाज़ पढ़ी उस में ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के लिए दुआ़ ज़रूर की है।

(इह़याउल उ़लूम, 1/109)

﴾36﴿ ज़ोहद किसे कहते हैं ?

माल न होने को ज़ोहद नहीं कहते बल्कि ज़ोहद येह है कि दिल में माल की रग़बत न हो। (इह़याउल उ़लूम, 1/114)

﴾37﴿ आ़जिज़ी व तक़्वा

सिलि्सलए क़ादिरिय्या, रज़विय्या, अ़त्तारिया के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दस से कुछ ज़ाइद लोगों के सामने बयान फ़रमाते अगर उस से ज़ियादा हो जाते तो बयान न फ़रमाते। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मजलिस में कभी बीस शख़्स पूरे न हुए। (इह़याउल उ़लूम, 1/139)

﴾38﴿ दूसरों की इस्लाह़ से पहले अपनी इस्लाह़

अपनी इस्लाह़ से क़ब्ल दूसरों की इस्लाह़ में मश्ग़ूल मत होना। सब से अहम दिल की सिफ़ात का इ़ल्म है जिसे सब ने छोड़ दिया है बुरी सिफ़ात हर इन्सान में होती हैं अपनी इस्लाह़ को छोड़ कर दूसरों की इस्लाह़ की फ़िक्र करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे अपने कपड़ों में सांप, बिच्छू हो और उस पर तवज्जोह नहीं बल्कि पंखा ढूंड कर दूसरों से मख्खी दूर करना चाहता है।

(इह़याउल उ़लूम, 1/149 मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

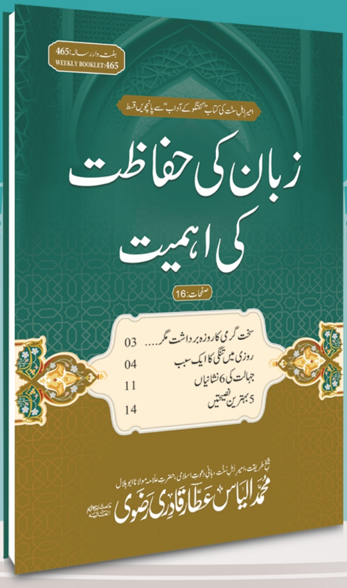

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in ✉ feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025